कथा सरिता

स्वयं को चेक करो

एक छोटा बच्चा एक बड़ी दुकान पर लगे टेलीफोन बूथ पर जाता है और मालिक से छुट्टे पैसे लेकर एक नंबर डायल करता है। दुकान का मालिक उस लड़के को ध्यान से देखते हुए उसकी बातचीत पर ध्यान देता है –

लड़का - मैडम क्या आप मुझे अपने बगीचे की सफाई का काम देंगी ?औरत - (दूसरी तरफ से) नहीं, मैंने एक दूसरे लड़के को अपने बगीचे का काम देखने के लिए रख लिया है।

लड़का - मैडम मैं आपके बगीचे का काम उस लड़के से आधे वेतन में करने को तैयार हूँ। औरत - मगर जो लड़का मेरे बगीचे का काम कर रहा है उससे मैं पूरी तरह संतुष्ट हूँ।

लड़का - (और ज़्यादा विनती करते हुए) मैंडम मैं आपके घर की सफाई भी फ्री में कर दिया करूँगा!!!

औरत - माफ करना मुझे फिर भी ज़रूरत नहीं है। धन्यवाद।

लड़के के चेहरे पर एक मुस्कान उभरी और उसने फोन का रिसीवर रख दिया। दुकान का मालिक जो छोटे लड़के की बात बहुत ध्यान से सुन रहा था वह लड़के के पास आया और बोला - ``बेटा मैं तुम्हारी लगन और व्यवहार से बहुत खुश हूँ, मैं तुम्हें अपने स्टोर में नौकरी दे सकता हूँ''।

लड़का - नहीं सर मुझे जॉब की ज़रूरत नहीं है, आपका धन्यवाद। दुकान का मालिक - (आश्चर्य से) अरे अभी तो तुम उस औरत से जॉब के लिए इतनी विनती कर रहे थे!!

लड़का - नहीं सर, मैं अपना काम ठीक से कर रहा हूँ कि नहीं बस मैं ये चेक कर रहा था, मैं जिससे बात कर रहा था, उन्हीं के यहां पर जॉब करता हूँ।

भावार्थ - ऐसे ही हमें भी रोज़ाना रात्रि में सोने से पहले चेक करना चाहिए कि दिनभर में क्या किया ? कितना भगवान को याद किया ? कहीं आपकी वजह से किसी को दुःख तो नहीं हुआ ? अगर अंजाने में हुआ भी तो उसी समय कमी को सुधारो और आगे से न हो क्योंकि गलती एक बार होती है बार बार नहीं।

असली की पहचान

एक राजा का दरबार लगा हुआ था, क्योंकि सर्दी का दिन था इसलिए राजा का दरबार खुले में बैठा था, पूरी आम सभा सुबह की धूप में बैठी थी। महाराज ने सिंहासन के सामने एक टेबल जैसी कोई कीमती चीज़ रखी थी। पंडित लोग दीवान आदि सभी दरबार में बैठे थे, राजा के परिवार के सदस्य भी बैठे थे। उसी समय एक व्यक्ति आया और प्रवेश मांगा। प्रवेश मिल गया तो उसने कहा, मेरे पास दो वस्तुएं हैं, मैं हर राज्य के राजा के पास जाता हूँ और अपनी बात रखता हूँ। कोई परख नहीं पाता, सब हार जाते हैं और मैं विजेता बनकर घूम रहा हूँ, अब आपके नगर में आया हूँ। राजा ने बुलाया और कहा कि क्या बात है, तो उसने दोनों वस्तुएं टेबल पर रख दी। बिल्कुल समान आकार, समान रूप रंग, समान प्रकाश, सब कुछ नख-सिख समान। राजा ने कहा, ये दोनों वस्तुएं एक हैं तो उस व्यक्ति ने कहा हाँ, दिखाई तो एक सी देती हैं लेकिन हैं भिन्न। इसमें से एक है बहुत कीमती हीरा और एक है काँच का टुकड़ा, लेकिन रूप रंग सब एक है। कोई आज तक परख नहीं पाया कि कौन सा हीरा है और कौन सा काँच। कोई परख कर बताये कि ये हीरा है, ये काँच। अगर परख खरी निकली तो मैं हार जाऊंगा और यह कीमती हीरा मैं आपके राज्य की तिजोरी में जमा करवा दूंगा। यदि कोई न पहचान पाया तो इस हीरे की जो कीमत है उतनी धनराशि आपको मुझे देनी होगी। इसी प्रकार से कई राज्यों से जीतता आया हूँ। राजा ने कहा, मैं तो नहीं परख सकूंगा, दीवान बोले, हम भी हिम्मत नहीं कर सकते क्योंकि दोनों बिल्कुल समान है। सब हारे, कोई हिम्मत नहीं जुटा पाया। हारने पर पैसे देने पड़ेंगे, इसका कोई सवाल नहीं, क्योंकि राजा के पास बहुत धन है, राजा की प्रतिष्ठा गिर जायेगी इसका सबको भय था। कोई व्यक्ति पहचान नहीं पाया।

आखिरकार पीछे थोड़ी हलचल हुई। एक अंधा आदमी हाथ में लाठी लेकर उठा। उसने कहा, मुझे महाराज के पास ले चलो। मैंने सब बातें सुनी हैं, और यह भी सुना कि कोई परख नहीं पा रहा है, एक अवसर मुझे भी दो।

एक आदमी के सहारे वह राजा के पास पहुंचा। उसने राजा से प्रार्थना की कि मैं तो जन्म से अंधा हूँ, फिर भी मुझे एक अवसर दिया जाये, जिससे मैं भी एक बार अपनी बुद्धि को परखूँ और हो सकता है कि सफल भी हो जाऊँ, और यदि सफल न भी हुआ तो वैसे भी आप तो हारे ही हैं। राजा को लगा कि इसे अ-वसर देने में क्या हर्ज है। राजा ने कहा, ठीक है। तो उस अंधे आदमी को दोनों चीज़ें छुआ दी गयी और पूछा गया कि इसमें कौन सा हीरा है और कौन सा काँच, यही परखना है। कथा कहती है कि उस आदमी ने एक मिनट में कह दिया कि यह हीरा है और यह काँच। जो आदमी इतने राज्यों को जीतकर आया था, वह नतमस्तक हो गया और बोला सही है, आपने पहचान लिया। धन्य हो आप, अपने वचन के मुताबिक यह हीरा मैं आपके राज्य की तिजोरी में दे रहा हूँ। सब बहुत खुश हो गये और जो आदमी आया था वह भी बहुत प्रसन्न हुआ कि कम से कम कोई तो मिला परखने वाला। वह राजा और अन्य सभी लोगों ने उस अंधे व्यक्ति से एक ही जिज्ञासा जताई कि तुमने यह कैसे पहचाना कि यह हीरा है और वह काँच। उस अंधे ने कहा कि सीधी सी बात है मालिक, धूप में हम सब बैठे हैं, मैंने दोनों को छुआ, जो ठंडा रहा वह हीरा जो गरम हो गया वह काँच। जीवन में भी देखना जो बात-बात में गरम हो जाये उलझ जाये, वह काँच जो विपरीत परिस्थित में भी ठंडा रहे वह हीरा है!

सच्ची सहायता कैसी

एक गांव में कमला नाम की महिला रहती थी। उसके परिवार में पति, बेटे-बहू सभी थे। कमला दिन-रात परिवार की देखभाल में लगी रहती। उसके दिन बड़े चैन से गुज़र रहे थे कि किसी बीमारी से उसकी पहले एक आँख की फिर दूसरी आँख की भी रोशनी चली गई। सभी का काम करने वाली कमला दूसरों पर निर्भर हो गई। कुछ दिनों तक तो बेटे-बहू ने सेवा की, फिर किसी बहाने वे वहां से चले गए। पति ने भी अंधी पत्नी का साथ नहीं दिया। भरे-पूरे परिवार में रहने वाली कमला बिल्कुल अकेली रह गई। ऐसे में उसके बचपन की सहेली लक्ष्मी उसे सहारा देने के लिए वहां आकर रहने लगी। लक्ष्मी का व्यवहार कमला को दुःखी कर देता था, लेकिन क्या करती। वह पानी मांगती तो लक्ष्मी एक बार तो दे देती लेकिन दुबारा मांगने पर कह देती, `मुझे तंग मत कर। उठ और खुद ले ले। कमला फिर खुद पानी लेने का प्रयास करती। कपड़े भी दुबारा मांगने पर अलमारी से खुद लेने को कह देती। कमला घूमने को कहती तो वह बड़े प्रेम से ले जाती लेकिन दोबारा कोई न कोई बहाना बनाकर उसे खुद ही घूमकर आने को कह देती। कमला दुःखी मन से खुद काम करने की कोशिश करती। धीरे-धीरे कमला अपने सारे काम खुद करने लगी। एक दिन लक्ष्मी ने कहा, `कमला मैं तुझसे बहुत प्यार करती हूँ इसलिए तेरी मदद करके तुझे और असहाय नहीं बनाना चाहती थी। मैं तुझसे जब काम के लिए मना करती थी तब मुझे बुरा तो लगता पर आज तू किसी भी काम के लिए पराधीन नहीं है।' कमला बोली, `लक्ष्मी, बुरे समय में जब मेरे अपने साथ छोड़ गए तब तूने सच्चे मन से मेरा साथ निभाया और मुझे इस लायक बनाया। यह उपकार मैं कभी नहीं भूलूंगी।' लक्ष्मी ने कहा, `उपकार की बात कर पराया मत कर।' इसके बाद कमला लक्ष्मी के साथ मिलकर असहाय लोगों को अपने पैरों पर खड़ा होना सिखाने लगी।

करनाल से.7-हरियाणा। सामाजिक संस्था एन.आई.एफ.ए.ए. द्वारा आयोजित शहीद भगत सिंह के जन्म दिवस के कार्यक्रम में हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल आचार्य देवव्रत को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. प्रेम व ब्र.कु. कुसुम। साथ हैं ब्र.कु. दयाल व अन्य।

बहादुरगढ़-हरियाणा। कांग्रेस अध्यक्षा सोनिया गांधी को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. भावना, ब्र.कु. ख्याति व ब्र.कु. सुरेन्द्र।

नयागंज-खुर्जा(उ.प्र.)। शुगर मिल के जनरल मैनेजर नरेशपाल जी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. शीला व ब्र.कु. नीलम।

बुदायूँ-उ.प्र.। म्यूनिसिपल डिपार्टमेंट की चेयरपर्सन फातिमा रज़ा को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सरोज।

देहरा-हि.प्र.। दिव्य हिमाचल समाचार पत्रिका व ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित अभियान रैली में उपस्थित हैं समाचार पत्रिका के मुख्य संपादक अनिल सोनी, शहर के गणमान्य जन, एस.डी.एम., डी.एस.पी., डी.एफ.ओ., ब्र.कु. कमलेश बहन व अन्य ब्र.कु. भाई बहनें।

बांदा-उ.प्र.। चैतन्य देवियों की झाँकी का उद्घाटन करने के पश्चात् विधायक जी की धर्मपत्नी श्रीमती मंजुला सिंह को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. गीता। साथ हैं अन्य ब्र.कु. बहनें।